Topic 96 चतुर्थी विभक्ति - 4

उत्पातेन ज्ञापिते च (वा०)

वाताय कपिला विद्युत ।

उत्पात (उपद्रव, अशुभसूचक घटनादि) से ज्ञापित (सूचित) होनेवाले अर्थ में चतुर्थी होती है।

वाताय कपिला विद्युत - इस उदाहरण में कपिला (चितकबरे रंग की) बिजली वात (आँधी) की सूचना देती है। कपिला विद्युत यह उत्पात है, उससे ज्ञापित वात शब्द में चतुर्थी होती है।

स्वमेव आतपायाऽतिलोहिनी । पीता वर्षाय विद्योता, दुर्भिक्षाय सिता मता । अतिलोहिनी अत्यन्त रक्ताविद्युत् आतप के लिए होती है। पीली बिजली वर्षा अतिवर्षा को सूचित करती है तथा सित (सफेद) बिजली दुर्भिक्ष की सूचना देती है।

हितयोगे च (वा०)

ब्राह्मणाय हितम् ।

हित शब्द के योग में चतुर्थी होती है।

यथा ब्राह्मणाय हितम् - इस उदाहरण में हित शब्द के योग में चतुर्थी प्रयुक्त हुई है। इसी प्रकार हितं नृभ्यो रामराज्यं गोराज्यं च । आदि । इनमें भी चतुर्थी होती है। 'हित योगे च' इस वार्तिक में चकार ग्रहण से बलि, सुख, रक्षित शब्दों के योग में चतुर्थी होती है। अर्थात् उक्त वार्तिक में चकार का ग्रहण अनावश्यक है। अतः यह व्यर्थ होकर बलि, सुख, रक्षित शब्दों के योग में भी चतुर्थी का विधान करता है क्योंकि इनके साथ चतुर्थी तदर्थार्थबलिहित सुखरक्षितैः । इस सूत्र में चतुर्थी के समास का आचार्य पाणिनि ने विधान किया है।

भूतेभ्यो बलिः। गवे सुरभम् (गाय के लिए सुरभकारक घासादि) ब्राह्मणेभ्यो रक्षितम् यह समास वैकल्पिक है, नित्य नहीं, अतएव यहाँ समासरहित वाक्यों का उदाहरणों में प्रयोग किया गया है।

क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः।

क्रियार्था क्रिया उपपदं यस्य तस्य स्थानिनः (अप्रयुज्यमानस्य) तुमुनः कर्मणि चतुर्थी स्यात्। फलेभ्यो याति। फलान्याहर्तुं यातीत्यर्थः। नमस्कुमों नृसिंहाय। नृसिंहं मनुकूलयितुमित्यर्थः। स्वं स्वयंभुवे नमस्कृत्येत्यादावपि।

जिसकी क्रिया के लिए दूसरी क्रिया उपपद हो उसकी स्थानी (अप्रयुज्यमान अध्याहार्य) तुमुन प्रत्ययान्त शब्द के कर्म में चतुर्थी विभक्ति हो। फलेभ्यो याति का तात्पर्य है फलानि आहर्तुं याति। आहर्तुम् - लाने को। यहाँ गमन क्रिया आहरण क्रिया के लिए है और वह आहरण क्रिया प्रयुक्त नहीं है, अपितु अध्याहार्य है। अतः उसके कर्म, फल शब्द में चतुर्थी विभक्ति होती है। नमस्कुमों नृसिंहाय। यहाँ नमस्कार क्रिया अनुकूलन क्रिया के लिए है, और वह अनुकूलन क्रिया प्रयुक्त नहीं है, अपितु अध्याहार्य है, अतः उसके कर्म नृसिंह में चतुर्थी हो जाती है।

नमुर्वाच्च भाववचनात्।

'भाववचनाश्च' इति सूत्रेण ये प्रत्यया विहितास्तदन्तात् चतुर्थी स्यात्। यागाय याति। यष्टुं यातीत्यर्थः।

भाववचनाश्च' इस सूत्र से जो प्रत्यय किया गया है तदन्त शब्द से चतुर्थी विभक्ति हो। यागाय याति — इस उदाहरण में याग शब्द में यज् धातु से तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में भाववाचक घञ् (अ) प्रत्यय का विधान किया गया है।

P.T.O.

अतः उससे निष्पन्न याग शब्द से चतुर्थी विभक्ति होती है। इस तुमर्थक घञ् प्रत्ययांत यागशब्द का अर्थ 'यष्टुम्' है। इसी प्रकार पाठाय गच्छति विद्यालये छात्रः। इसमें 'पाठाय' शब्द पठ् धातु से तुमर्थक घञ् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न होता है, अतः उसका अर्थ पठितुम् होता है। एवं कवीं प्रशाति लेखाय। इसमें लिख् धातु से तुमर्थक भाववाचक घञ् प्रत्यय लगाकर लेख शब्द निष्पन्न हुआ, उससे पूर्वोक्त सूत्र से चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च। एभिर्योगे चतुर्थी स्यात्। हरये नमः। 'उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी। नमस्करोति देवान्। प्रजाभ्यः स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्। तेन दैत्येभ्यो हरिरलं प्रभुः ~~समर्थ~~ समर्थः, शक्त इत्यादि। प्रभ्वादि शब्दयोगे षष्ठ्यपि साधुः। तस्मै प्रभवति, स एषां ग्रामणीः इति निर्देशात्। तेन प्रभुर्बुभु- ~~भुवनत्रय~~ भुवनत्रयस्य च इति सिद्धम्।

वषडिन्द्राय। चकारः पुनर्विधानार्थः। तेन आशीर्विवक्षायां (चः इति क्षिद) परामपि चतुर्थी चाशिषि। इति षष्ठीं बाधित्वा चतुर्थ्येव भवति। स्वस्ति गोभ्यो भूयात्।

स्वाहा में (स्व + आहा) स्वत्व का त्याग अभिप्रेत है क्योंकि 'हा' धातु का अर्थ त्याग है। स्वधा में स्वत्वधारण का अभिप्राय है। स्व + धा। अतएव देवकार्य में स्वाहा का प्रयोग होता है तथा पितृकार्य में स्वधा का

P.T.O

दैवकार्य यज्ञादि कर्म है, अतः वह निष्काम कर्म ही है। ग्रामणी का अर्थ ग्रामप्रधान होता है। अतएव 'प्रभुर्बुभूर्भुवनत्रयस्य यः' इत्यादि पर्यन्त प्रयोग सिद्ध होते हैं।